प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि जयंती रामचंद्र भाटवडेकर ने मेरे निर्देशन में ` मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक युगबोध ` लघु शोध प्रबंध एम्. फिल. उपाधि के लिए लिखा हैं । यह उनकी मौलिक रचना हैं । यह लघुशोध प्रबन्ध पूर्ण योजना के अनुसार लिखा गया हैं । जो तथ्य इस लघुशोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं ।

(डॉ. व्यं. वि. द्रविड)
निर्देशक

कोल्हापुर ।
दिनांक :५:३:१९९० ।

..

प्रख्यापन

यह लघु शोध प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. के लघु-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस विश्व-विद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : ५ : ३ : १९९० ।

(ज.रा. माटवडेकर)

••

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

१. भूमिका — १-३

प्रबन्ध के पाँचों अध्यायों का संक्षिप्त परिचय

२. प्रथम अध्याय - मोहन राकेश : जीवन परिचय, व्यक्तित्व तथा कृतित्व — ४-१७

प्रस्तावना, जीवनपरिचय, राकेश का व्यक्तित्व - बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व, स्वभाव व रुचियाँ, राकेश के साहित्य में व्यक्तित्व का प्रक्षेपण, साहित्यिक परिचय, निष्कर्ष ।

३. द्वितीय अध्याय आधुनिकता : अर्थ और स्वरूप — १८-२९

आधुनिकता का अर्थ, आधुनिकता का स्वरूप, निष्कर्ष ।

४. तृतीय अध्याय आधुनिक युगबोध के विविध आयाम — ३०-५२

प्रस्तावना, `युग` तथा `बोध` का अर्थ, आधुनिक युगबोध का अर्थ, आधुनिकीकरण और आधुनिकता बोध, आधुनिक बोध की कुछ प्रवृत्तियाँ, विज्ञान और आधुनिक युगबोध, आधुनिक युगबोध की विविध समस्याएँ - विज्ञान के कारण उत्पन्न समस्याएँ, धर्म के कारण उत्पन्न समस्याएँ, मूल्यहीनता के कारण उत्पन्न समस्याएँ, नगरीकरण तथा आधुनिकीकरण से उत्पन्न समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ, नैतिकता और आधुनिक युगबोध, निष्कर्ष ।

पृष्ठ क्रमांक

४. चतुर्थ अध्याय मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिक युगबोध ५३ - १७२

`आषाढ का एक दिन` में आधुनिक युगबोध ५३ - ७५

संक्षेप में कथावस्तु, कथावस्तु में आधुनिक युगबोध, `आषाढ का एक दिन` के पात्रों में आधुनिक युगबोध - `कालिदास` में आधुनिक युगबोध, `मल्लिका` में आधुनिक युगबोध, नाटक के अन्य पात्रों में आधुनिक युगबोध - अंबिका, मातुल, दंतुल, प्रियंगुमंजरी, अनुस्वार और अनुनासिक, रंगिणी - संगिनी, शिल्प में आधुनिक बोध, निष्कर्ष ।

`लहरों के राजहंस` में आधुनिक युगबोध ७६ - १०४

संक्षेप में कथावस्तु, कथावस्तु में आधुनिक युगबोध - प्रतीक योजना की नवीनता व आधुनिकता, कथावस्तु में समकालीन संवेदना, पात्रों में आधुनिक युगबोध - `नंद` में आधुनिक युगबोध, `सुंदरी` में आधुनिक युगबोध, नाटक के अन्य पात्रों में आधुनिक युगबोध, शिल्प की दृष्टि में आधुनिक युगबोध - भाषा में आधुनिक युगबोध, रंगमंच की नवीनता और आधुनिकता बोध , निष्कर्ष ।

`आधे - अधूरे` में आधुनिक युगबोध - १०५ - १४७

संक्षेप में कथावस्तु, कथावस्तु में आधुनिक युगबोध, `आधे-अधूरे` के पात्रों में आधुनिक युगबोध - `महेन्द्रनाथ` में आधुनिक युगबोध, `सावित्री` में आधुनिक युगबोध, सावित्री और महेन्द्रनाथ में आधुनिक युगबोध, अन्य पात्रों में आधुनिक युगबोध - लडका-अशोक, बडी लडकी - बिन्नी, छोटी-लडकी - किन्नी, अशोक, बिन्नी और किन्नी में आधुनिक युगबोध, सावित्री और महेन्द्रनाथ का बच्चोंपर पडा प्रभाव, आधुनिक मध्यवर्गीय लोगों का प्रतिनिधित्व करनेवाले पात्र, पारिवारिक विघटन से उत्पन्न समस्याएँ, बदलते मूल्यों से उत्पन्न समस्याएँ -- विसंगति, बोध-आर्थिक अभाव के कारण उत्पन्न विसंगतियाँ, असंतोष, प्रेमविवाह की समस्या, स्त्री के नौकरी करने संबंधी समस्या, शिल्प के धरातलपर

आधुनिक युग बोध - भाषा में आधुनिक बोध, संवादों में आधुनिक बोध, अभिनेयता तथा रंगमंच में आधुनिक युगबोध, संघर्ष तथा अंतर्द्वन्द्व, निष्कर्ष ।

`पैर तले की जमीन` में आधुनिक युगबोध -- १४७ - १७२

प्रस्तावना, संक्षेप में कथावस्तु, `पैर तले की जमीन` में आधुनिक युगबोध, पात्रों में आधुनिक युगबोध --` अब्दुल्ला ` में आधुनिक युगबोध, ` नियामत` में आधुनिक युगबोध, ` मुहम्मद अय्यूब` में आधुनिक युगबोध , ` नीरा` में आधुनिक युगबोध , ` रीता` में आधुनिक युगबोध, ` पंडित` में आधुनिक युगबोध, ` झुनझुनवाला` में आधुनिक युगबोध, ` पैर तले की जमीन` के संवादों में आधुनिक युगबोध, ` पैर तले की जमीन` की भाषा में आधुनिक युगबोध, ` पैर तले की ज़मीन` की अभिनेयता में आधुनिक युगबोध , निष्कर्ष ।

६. उपसंहार १७३ - १७७

७. आधार ग्रंथ १७८

८. संदर्भ ग्रंथ सूची १७९ - १८२

:: भूमिका ::

मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के क्षेत्र के एक ऐसे नाटककार हैं, जिन्होंने अपने चारों नाटकों में आधुनिकता का प्रयोग किया है। जैसे जैसे युग बदलता है, लोगों के विचार भी बदलते हैं। अगर साहित्य में वे ही बातें बार-बार दोहरायी जायें, तो वह साहित्य पाठकों को रंजक नहीं लगता। राकेश जी ने समाज की यह मनोवृत्ति जान ली थी और इसीलिए उन्होंने अपने चारों नाटकों में आधुनिक विचारधारा को प्रकट किया है। उनके सिर्फ विचार ही नये नहीं हैं, लेखनशैली में भी नवीनता है। हिन्दी नाटकों में श्री. जयशंकर प्रसाद पहली बार नवीनता लाए, लेकिन - भाषा और क्रिया और रंगमंचीयता तथा अभिनेयता के क्षेत्र में राकेश जी ने अपना एक खास स्थान उत्पन्न किया है।

मोहन राकेश ने अपने नाटक आधुनिकता को दृष्टि में रखकर लिखे हैं। उनके नाटकों का आधुनिकता की दृष्टि से विवेचन करने का भी अनेक लेखकों ने प्रयत्न किया है। लेकिन उनके नाटक आज की दृष्टि में क्या महत्व रखते हैं, तथा आज के समाज का चित्रण उनके नाटकों में है या नहीं, अगर है तो कितनी मात्रा में है, इत्यादि का विवेचन करने का प्रयत्न मैं ने अपने इस लघु - शोध प्रबन्ध में किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में मोहन राकेश का जीवन परिचय, व्यक्तित्व और उनके साहित्य के बारे में सूचना प्रस्तुत की है। राकेश जी का जीवन सामान्य मनुष्य की तरह नहीं था। बचपन से ही जो कार्य आप नहीं करना चाहते थे, वे ही उन्हें करने पडे। अपनी गृहस्थी के जीवन में भी वे सफल नहीं हो सके। उनका व्यक्तित्व विविध प्रकार के अंतर्द्वन्द्वों से भरा था। अहंवादी तथा स्वच्छंदवादी प्रकृति के होने के कारण अनेक नौकरियाँ

उन्होंने छोडीं । लेकिन साहित्य लेखन के प्रति उन्हें बचपन से ही रुचि थी । अपने जीवनकाल में उन्होंने काव्य को छोडकर बाकी सभी प्रकार का साहित्य रचा ।

द्वितीय अध्याय में आधुनिकता के अर्थ और उसके स्वरूप का परिचय दिया हैं । `आधुनिकता` शब्द कैसे बना, उसके विविध अर्थ कौनसे हैं, आधुनिकता की विविध प्रवृत्तियों की तथा स्वरूप की चर्चा करने का प्रयास यहाँ किया हैं ।

तृतीय अध्याय में आधुनिक युगबोध के बारे में जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया हैं । आज समाज में विज्ञान का विस्तार तथा बदलती परिस्थिति के कारण विचार बदलते रहते हैं । विचार बदलने की इसी प्रवृत्ति को आधुनिक युगबोध कहते हैं । आधुनिकीकरण और आधुनिकता बोध में होनेवाला संबंध, आधुनिक बोध की कुछ प्रवृत्तियाँ, विज्ञान और आधुनिक युगबोध का संबंध तथा विज्ञान और विचार के बदलने के कारण उससे उत्पन्न होनेवाली विभिन्न समस्याओं का चित्रण इस अध्याय में किया हैं ।

चौथे अध्याय में मोहन राकेश के चारों नाटकों का आधुनिक युगबोध की दृष्टि से विवेचन करने का प्रयत्न किया हैं । इसमें उनके प्रत्येक नाटक की कथावस्तु संक्षेप में बताकर कथावस्तु में होनेवाला आधुनिक युगबोध, पात्रों में आधुनिक युगबोध, संवादों में आधुनिक बोध, भाषा और शिल्प के क्षेत्रों में होनेवाली नवीनता आदि का विवेचन किया गया हैं ।

पाँचवें और अंतिम अध्याय में पूरे विवेचन का निष्कर्ष `उपसंहार` के अंतर्गत प्रस्तुत किया हैं । इसमें राकेश जी ने किस प्रकार अपने चारों नाटकों में आधुनिकता दर्शायी हैं इसका चित्रण किया गया हैं ।

प्रबंध के अंत में आधारग्रंथों एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गयी हैं ।

प्रस्तुत प्रबन्ध का पूर्ण प्रणयन पूज्य गुरुवर डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड जी के सुयोग्य निर्देशन में हुआ हैं । परम श्रध्देय डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड जी की मैं

अत्यधिक ऋणी हूँ । अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी उन्होंने जो अनमोल मार्गदर्शन किया, मेरी अनगिनत गलतियों को सुधारा-सँवारा, इस लिए मैं आजीवन ऋणमुक्त नहीं हो सकूँगी । उनके संयत, संतुलित, संयमपूर्ण एवं आत्मीयता से किए गये मार्गदर्शन से ही यह कार्य सफलता से पूर्ण हो सका । इस प्रकार इस प्रबन्ध के पूर्णत्व का पूरा श्रेय उन्हीं को है ।

अनेक विघ्नबाधाओं को उठाते हुए भी मुझे अपनी शोध-साधना के निर्दिष्ट पथ पर आगे बढने की प्रेरणा और प्रोत्साहन जिन महानुभावों ने दिया है और जिन अनेक सज्जनों एवं परिवार के लोगों से शुभकामनाएँ,सहयोग मिला है, उन सब के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों एवं पत्रपत्रिकाओं का लाभ शिवाजी विश्वविद्यालय,स.गा.म.कॉलेज,कराड तथा महिला महाविद्यालय,कराड के ग्रंथालय से हुआ । अत: ग्रंथालयों के पदाधिकारियों की भी मैं हृदय से आभारी हूँ ।

इस शोध-प्रबन्ध के टंकन कार्य को सुचारु रुप से पूर्ण किया, इसलिए मैं श्रीयुत बालकृष्ण रा.सावंत, कोल्हापुर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

प्रबन्ध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैं ने प्रयास किया है । इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी परितोष हुआ, तो मैं अपने प्रयासों को चरितार्थ समझूँगी ।

कोल्हापुर ।
दिनांक : ५ : ३ :१९९० ।

(ज.रा. भाटवडेकर)
शोध-छात्रा

••